HISTORY

B.A.PART-I (Hons)

Paper-II (The Rise of Modern west)

Unit-III, (Development of England As National State)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 80

# "राष्ट्रीय राज्य के रूप में इंग्लैंड का विकास"

## (Devlopment of England As National State)

राष्ट्रीय राज्यों के रूप में इंग्लैंड का विकास पुनर्जागरण के बाद संभव हो पाया। इंग्लैण्ड में पुनर्जागरण के समय (1453 ई.) में गुलाबों का युद्ध चल रहा था। 1455 ई. में यह युद्ध आरम्भ हुआ था। सामन्त वर्ग इस युद्ध में दो भागों में विभाजित था। एक वर्ग सिंहासन के लिये यार्क वंश का और दूसरा वर्ग लंकास्टर वंश का समर्थन कर रहा था। इसे गुलाबों का युद्ध इसलिये कहा जाता है क्योंकि यार्क वंश का प्रतीक श्वेत गुलाब और लाल गुलाब लंकास्टर वंश का प्रतीक था। इंग्लैण्ड के सामन्तों का दीर्घकालीन युद्ध था जो एक शताब्दी से अधिक समय तक चला था। गुलाबों का युद्ध इंग्लैण्ड के सामन्तों में अराजकता की चरम सीमा थी। अपने स्वार्थों के अनुसार वे पक्ष बदलते रहते थे। 1485 ई. में वासवर्थ के युद्ध में लंकास्टर वंश की ओर से सिंहासन के दावेदार हेनरी को निर्णायक विजय प्राप्त हुई। हेनरी ट्युडर के नाम से वह गद्दी पर बैठा।

**हेनरी सप्तम्**-- इंग्लैण्ड में राष्ट्रीय राजतन्त्र की स्थापना 1485 ई. में हेनरी ट्यूडर के राज्यारोहण से होती है। इंग्लैण्ड में अराजकता की स्थिति और निरन्तर युद्धों के कारण सामन्त वर्ग की महत्वाकांक्षा तथा अवसरवादिता थी। किसी भी समय वे युद्ध में पक्ष परिवर्तन के लिये तैयार रहते थे। इससे राजा की स्थिति सदैव दुर्बल बनी रहती थी और उसे सामन्तों की विभिन्न मांगों को बाध्य होकर स्वीकार करना पड़ता था। राजा की स्थिति इससे दुर्बल होती जाती थी। हेनरी सप्तम् को ज्ञात था कि शक्तिशाली सामन्त वर्ग लंकास्टर वंश के पतन का कारण था। सामन्त वर्ग की भूमिका सेक्सन काल से ही राज्य और गणतन्त्र दोनों के लिये हानिकारक सिद्ध हुई थी। सौभाग्य से अनेक सामन्त गुलाबों के दीर्घकालीन युद्धों में मारे गये और अनेक आर्थिक दृष्टि से दुर्बल हो गये। सामन्तों के दमन का कार्य इससे सरल हो गया। इस कार्य में उसे नवोदित मध्यम वर्ग ने सहयोग प्रदान किया। जो व्यापार तथा बौद्धिक गतिविधियों में व्यस्त था और शान्ति चाहता था। इस वर्ग पर पुनर्जागरण के कारण उत्पन्न राष्ट्रीय भावना का भी प्रभाव था। इस प्रबुद्ध मध्यम वर्ग का विश्वास था कि राजा को शक्तिशाली बना कर सामन्तों का अन्त किया जा सकता था और शान्ति प्राप्त की जा सकती थी। मध्यम वर्ग का सहयोग प्राप्त करके हेनरी ने भी सामंतों का दमन किया।

### सामन्तों का दमन-- हेनरी ने राजतन्त्र को सुदृढ़ करने के लिये सामन्तों के प्रति निम्नलिखित कार्य किये, जो इस प्रकार है....

(1) सामन्तों का महत्व प्रशासन में कम किया गया। उन्हें हेनरी ने कोई भी महत्वपूर्ण प्रशासनिक पद नहीं दिया। मध्यम वर्ग से तथा पादरी वर्ग से उसने अपने अधिकारियों को नियुक्त किया।

(2) हेनरी ने पार्लियामेण्ट में भी मध्यम वर्ग के लोगों को प्रमुखता दी। इस प्रकार पार्लियामेण्ट उसकी समर्थक हो गई और सामंतों का उसने विरोध किया और इसके लिये राजा का उसने समर्थन किया।

(3) लिबेरी का नियम सामन्तों के विरुद्ध पारित किया गया सामन्तों को इस नियम से आदेश दिया गया कि वे सैनिकों के समान अपने सेवकों को न रखें।

(4) मेन्टेनेन्स नियम सामन्तों के विरुद्ध पारित किया गया। सामन्तों का इससे न्यायिक कार्यों में हस्तक्षेप समाप्त हो गया। अब न्यायाधीशों को भयभीत करके सामन्त लोग अपने अपराधी सेवकों को छुड़ा नहीं सकते थे। जनता को इस नियम से सामन्तों के अत्याचारों से मुक्ति मिल गई।

(5) एक विशेष न्यायालय स्टार चेम्बर सामन्तों के लिये स्थापित किया गया। सामन्तो को दण्ड देने के लिये पार्लियामेण्ट ने इस न्यायालय को विशेष प्रक्रिया अपनाने का अधिकार प्रदान किया।

(6) समस्त सामंतों को बुलाकर राजा ने इन नियमों का पालन करने के लिये शपथ लेने को बाध्य किया।

(7) राजवंश के पुत्र और पुत्रियों का विवाह सामन्त वर्ग से करने की प्रथा हेनरी सप्तम् ने समाप्त कर दी जिससे राजवंश के लिये वे संकट उत्पन्न न कर सके।

(8) हेनरी सप्तम् ने बारूद पर राज्य का एकाधिकार स्थापित किया। सामन्तों के दुर्ग इससे आरक्षित हो गए। बारूद के आविष्कार से व्यक्तिगत शौर्य दिखाने के युग का अन्त हो गया और राज्य की शक्ति में अपरिमित वृद्धि हुई। अब उसके पास अपनी स्थायी सेना थी और सामन्तों की सैनिक सेवा पर वह निर्भर नहीं था।

**राजतन्त्र का दृढ़ीकरण**-- हेनरी सप्तम ने राजतन्त्र को सुदृढ़ बनाने के लिये अन्य कार्य भी किये। वह इस बात से अवगत था कि धन के अभाव में सिंहासन उसके हाथों से निकल सकता था। अतः उचित और अनुचित सभी तरीकों से उसने धन एकत्रित किया। निरंकुश राज्य की रक्षा धन से ही हो सकती थी। राजकीय भूमि के कर में उसने वृद्धि की। गुलाबों के युद्ध में जिन सामन्तों की मृत्यु हो गई थी. उनकी सम्पत्ति जब्त कर ली गई। न्यायालय के द्वारा उसने सामन्तों पर भारी जुर्माना किये। उसने युद्ध की नीति को त्याग कर कोष एकत्रित किया। अपराधियों को उसने क्षमा पत्र बेचकर तथा उच्च सरकारी पदों को बेचकर भी धन एकत्रित किया। व्यक्तिगत व्यापार करके भी उसने धनोपार्जन किया। इतना ही नहीं, उसने धनी लोगों से बलपूर्वक ऋण लेने की नीति भी आरम्भ की। उसका दूसरा उपाय एक राजभक्त कर्मचारी वर्ग तैयार करना चा। शिक्षित मध्यम वर्ग से उसने कर्मचारी प्राप्त किये जो पूर्ण रूप से राजा के निष्ठावान सेवक थे और उसकी कृपा पर निर्भर थे। उसका तीसरा उपाय यह था कि पार्लियामेण्ट को कम से कम बुलाया जाये। पार्लियामेण्ट ने उसको पूरा सहयोग प्रदान किया क्योंकि वह राजतन्त्र सुदृढ़ बनाना चाहती थी। ट्यूडर काल की यह विशेषता थी कि राजा और पार्लियामेण्ट के उद्देश्य समान थे और पार्लियामेण्ट राष्ट्र की प्रगति तथा सुरक्षा के लिये राजा का आदेश मानने को भी तैयार थी।

**स्काटलैण्ड, स्पेन से मित्रता**-- ब्रिटिश द्वीप में इंग्लैण्ड के अलावा स्काटलैण्ड में भी राजतन्त्र था। हेनरी सप्तम् ने स्कॉटलैंड के राजा से अपनी पुत्री का विवाह करके शान्ति स्थापित की। हेनरी ने शक्तिशाली स्पेन का समर्थन प्राप्त करने के लिये अपने पुत्र का विवाह फर्डिनेंड और इसाबेला की पुत्री से किया।

हेनरी की महान उपलब्धि यह थी कि उसने राजतंत्र की प्रतिष्ठा और शक्ति पुनः स्थापित की। सामन्तवाद को समाप्त करके उसने निरंकुश राज्य की स्थापना की। उसने व्यापारी, बौद्धिक वर्गों के समर्थन से राष्ट्रीय आकांक्षाओं को पूरा किया और उनके सहयोग से निरंकुश सत्ता को सुदृढ़ किया।इस प्रकार पुनर्जागरण के बाद राष्ट्रीय राज्य के रूप में इंग्लैंड का विकास संपन्न हुआ।

# धन्यवाद